बाबा ने ज्ञान रत्नों से श्रृंगार किया

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने अपने अनुभव में बताया कि जब मैंने पहली बार ब्रह्मा बाबा को देखा तो मुझे बाबा में विष्णु का साक्षात्कार हुआ। मुझे लगा कि शायद मैं स्वप्न देख रही हूँ, लेकिन वो स्वप्न तो नहीं था। वास्तव में बाबा साक्षात विष्णु स्वरूप दिखाई देते थे। बाबा हम छोटे बच्चों को हर बात बड़े प्यार से सिखाते थे। गलती होने पर भी बाबा ने हमें कभी भी नहीं डांटा और ही प्यार के सागर बाप ने हमें बड़े प्यार से राजकुमारी की तरह पालना दी। शिक्षाएं भी बहुत प्यार से समझाते थे। जिन्हें हम सहर्ष स्वीकार करते थे। यज्ञ की हर प्रकार की सेवा बाबा स्वयं खुद करके हमें सिखाते थे। बाबा को देखकर हम भी चाहे कर्मणा, चाहे वाचा, छोटी-बड़ी सेवा बड़े प्यार से करते थे, क्योंकि मेरा लक्ष्य था कि मुझे इस अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ में सम्पूर्णतया स्वाहा होना है।

हमें तपस्वीमूर्त बनाया

हम आत्माओं को शक्तियों से तथा गुणों से सम्पन्न बनाने के लक्ष्य से खास वतन से शिवबाबा ने तपस्या अर्थात् भट्ठी का प्रोग्राम भेजा। हम दिन-रात योगाभ्यास करते थे। कभी-कभी 8-8 घंटे भी तपस्या करते थे। जिसमें फरिश्तेपन की स्थिति का तथा शक्तिशाली स्थिति का अनुभव होता था। मैं वो ही शक्ति हूँ जिसकी मन्दिरों में पूजा-अर्चना होती है, ऐसा स्वयं को शक्ति स्वरूप अनुभव होता था।

बाबा हमें भविष्य में होने वाली घटनाएं सुनाते थे कि कैसे विनाश होगा, कैसी भयानक परिस्थितियां पेपर के रूप में आपके सामने आयेंगी और कैसे उस समय तुम्हें अपनी शक्तिशाली अचल-अडोल स्थिति रखनी होगी। हम इस योग की भट्ठी में विशेष मौन भी रखते थे। जिससे हमें योगाभ्यास में सुन्दर अनुभूतियां होती थीं। भट्ठी में स्वर्गिक जीवन के अनोखे दृश्य भी दिखाई देते थे जिससे बुद्धियोग पुरानी दुनिया से स्वतः ही हटता था। वही कठिन तपस्या जो बाबा ने 14 वर्ष के कालावधि में कराई, जीवन में मददगार बन गई। उससे योग हमें सहज अनुभव होता है।

बाबा ने हमें ज्ञान रत्नों का दान करना सिखाया

बाबा सदैव कहते थे,बच्चे, ये एक-एक ज्ञान रत्न अमूल्य है। जो इन्हें धारण करेगा वो कौड़ी से हीरे तुल्य बन जाएगा। जितना तुम महादानी बनकर अनेकों को ये खज़ाना बांटोगे उतनी ही ये वृद्धि को पायेगा और अनेकों की दुआयें तुम्हें आगे बढ़ायेंगी।

समस्या के गीत गाने से समाधान नहीं मिलते

- ब्र.कु. उर्वशी बहन,नई दिल्ली

कुदरत ने तो आनंद ही आनंद दिया था, दुःख तो... हमारी खोज है...

वास्तव में यही सच है कि दुःख हमारी ही खोज है। बताइये क्या नहीं दिया बाबा ने हम बच्चों को, खाने का भोजन नहीं है, पहनने का वस्त्र नहीं है या सोने को बिस्तर नहीं है? बाबा ने सब कुछ दिया है और अच्छे ते अच्छा दिया है फिर भी आप कहते हो कि वो सुख नहीं, वो प्राप्ति नहीं है। देखो बाबा मिला तो सब कुछ मिला। क्या आप ये महसूस करते हो? बाबा ने हमें वो सबकुछ दिया जो गुरू, साधु, संत व मनुष्य आत्मा हमें कभी दे नहीं सकते। बाबा ने हमें कितने खज़ानों से भरपूर किया है स्मृति तो लाओ ज़रा सभी की। बाबा ने हमें सच्चा सुख दिया, अविनाशी ज्ञान दिया जो 21 जन्म चलेगा, किसी के छिनने से खत्म नहीं होगा, किसी को दान करने से कम नहीं होगा, ये आधाकल्प चलेगा। आप सोचो कि हमारा अंत का जन्म जब इतना श्रेष्ठ है तो पहला जन्म कितना श्रेष्ठ होगा! हम सच में कोई साधारण आत्माएं नहीं हैं लेकिन हम स्वयं को साधारण समझ लेते हैं। हमें परेशान हमारा बीता हुआ कल और आने वाला कल करता है और हमारी अनंत इच्छाएं, कामनाएं करती हैं। अब बीते कल को तो कोई बदल नहीं सकता तो उसकी फिक्र करना तो हमारी अज्ञानता ठहरी।

आने वाले कल्प में हूबहू वही होगा जो कल्प पहले हुआ था, यहाँ आप ड्रामा का पाठ पक्का कर लें और रही बात अनंत इच्छाओं की तो वह स्वतः ही समाप्त होने लगेंगी। जब आपका प्रेम बाबा से बढ़ने लगेगा। बाबा से प्रेम बढ़ाने का साधन है बाबा की मुरली। मुरली ही एक ऐसी दवा है जिसमें आत्मा की हर बीमारी का इलाज है, क्योंकि जब आत्मा सूक्ष्म है तो उसकी बीमारी सूक्ष्म है, अब जब हमारी बीमारी सूक्ष्म है तो दवा भी तो सूक्ष्म ही होगी और इलाज करने वाला भी यक़ीनन फिर सूक्ष्म ही होगा(शिव बाबा) ना! कई बार हम बच्चे बाबा से गलत उम्मीद लगा लेते हैं जैसे बाबा हमें एक घर दिला दें, संतान को सुधार दें, धंधा अच्छा कर दें, नौकरी लगवा दें ये सभी बाबा हमें देने नहीं आए हैं, बाबा हमारी कोई भी हद की कामना पूर्ण करने नहीं आए। बाबा हम आत्माओं को ज्ञान व गुणों से भरने आयें हैं, आप जितना चाहे उतना ले लें। सरल शब्दों में कहें तो बाबा हमें बेहद का वर्सा देने आए हैं। अब कई बार हम ब्राह्मण आत्माओं की बाबा से शिकायतें बहुत होती हैं जैसे बाबा ये ना हुआ होता तो ये भी न होता, वो ऐसा व्यवहार नहीं करते तो आज ये समस्या भी ना आती, परन्तु जो बीत चुका उसका चिंतन करने से तो कुछ बदलेगा नहीं ना, लेकिन हाँ हमारी शक्ति व समय ज़रूर व्यर्थ चला जाएगा इसलिए बीती को बिंदी लगाओ और आगे बढ़ो, ड्रामा के पट्टे पर स्थिर रहो। समस्या तो आएंगी ही और अंत तक आएंगी क्योंकि जितना-जितना हम बाबा के करीब आते हैं उतनी ही परीक्षाएं बढ़ती जाती हैं।

> परिस्थिति, समस्यायें हमें नया अनुभव देती हैं। समस्याओं का रोना रोने के बजाय इस दृष्टिकोण को बदलें और आगे बढ़ें।
>
> परमात्म प्रदत्त मिली खूबियों को अपने में झांके और निहारें। जो कुदरत ने दिया है उन प्राप्तियों को समय प्रति समय उपयोग और प्रयोग में लायें।

विद्यालय की याद है ना कि 1,2 कक्षा में 3 परीक्षाएं ही होती हैं हिंदी, अंग्रेजी और गणित की और जब हम हाई स्कूल व इंटर में आ जाते हैं तो परीक्षाएं भी 5,6 होती हैं। पेपर आना अर्थात् आगे बढ़ना इसलिए अपनी समस्या से डरना कोई वीरता नहीं है हमारी। याद रखिये परीक्षा नहीं तो उन्नति नहीं।

वैसे भी रोना रोने से कभी समस्या का समाधान नहीं मिलता। बाबा अक्सर कहते भी हैं कि पश्चाताप करने से आप प्रायश्चित करो इससे आपकी गलती भी सुधरेगी व समय भी व्यर्थ नहीं जाएगा। गलती करना गलत नहीं है परन्तु गलती को पुनः दोहराना गलत है। एक उदाहरण देते हैं- आपको कोई बीमारी होती है तो क्या आप बैठकर यही सोचते रहते हैं की हाय! मुझे तो फलानी बीमारी हो गयी है या आप डॉक्टर के पास जाते हैं? डॉक्टर के पास जाते ना! अब डॉक्टर भी आपको देखते ही आपका इलाज शुरू करता या सिर्फ यही बोलता है कि - अच्छा आपको बीमारी हो गयी, ये गलत हुआ? इलाज शुरू करता है ना परंतु और फिर आप ठीक हो जाते हैं। और जो डॉक्टर के पास जाते ही नहीं सिर्फ बीमारी के गीत गाते रहते तो वो ठीक भी कभी होते नहीं। बिल्कुल ऐसा ही हिसाब हमारा और हमारी ज़िंदगी के साथ है अगर आप अपनी समस्या का सिर्फ वर्णन कर रहे हैं तो आप कभी भी समाधान नहीं ढूंढ पाएंगे इसलिए अब समस्या पर नहीं समाधान पर जाओ।

आपके समाधान आपको मुरली से मिल सकते हैं, योग में बैठने पर बाबा से टचिंग हो सकती है, आपके साथी, सहयोगी आपको मदद दे सकते हैं, किसी से भी व किसी भी रूप में आपको आपका समाधान मिल सकता है। इसलिए अब अपना दृष्टिकोण बदलें और समस्या की बजाय समाधान पर ध्यान दें जिससे आपकी मुश्किल भी हल होगी और समय का भी आप लाभ ले सकेंगे। बाबा हमें रोज़ नया दृष्टिकोण देते हैं मुरली में, यदि रोज़ हम उसे भी उपयोग में लाएं तो आप कुछ दिन में ही ये अनुभव करेंगे की समस्या तो वास्तव में हमारी कुछ थी ही नहीं। भगवान के बच्चे भी समस्याओं के दुबन में फँसे रहेंगे तो अज्ञानी मनुष्य आत्माओं को हल कौन देगा, तनिक विचार करो! इसलिए अब बाबा पर पूरा बलिहार जाओ अपने भविष्य की बागडोर तो बाबा के हाथ में सौंपी ही है परन्तु अपना बीता कल भी पूर्ण रीति से सौंप दीजिए क्योंकि कई बार हमें हमारा अतीत ही इस ज्ञान मार्ग में आगे नहीं बढ़ने देता है।

रायपुर-छ.ग.। माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को भाई दूज का तिलक लगाते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सविता दीदी।

छतरपुर-म.प्र.। बुंदेलखंड केसरी छत्रसाल स्मारक पब्लिक ट्रस्ट द्वारा छतरपुर स्थापना दिवस पर गाँधी चौक बाज़ार स्थित ट्रस्ट भवन में आयोजित कार्यक्रम में समाज सेवा के क्षेत्र में अपनी अथक सेवाएं और आध्यात्मिकता की अलख जगाने के लिए स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु.शैलजा बहन को सारस्वत सम्मान स्मृति चिंह, शॉल, श्रीफल के द्वारा सम्मानित किया गया एवं साहित्य की दिशा में कार्य करने वाले पद्मश्री सम्मान से सम्मानित डॉ.अवध किशोर जड़िया को भी सम्मानित किया गया। इस दौरान विधायक आलोक चतुर्वेदी, नगरपालिका अध्यक्ष ज्योति चौरसिया, पूर्व विधायक उमेश शुक्ला, छत्रसाल स्मारक पब्लिक ट्रस्ट अध्यक्ष हरि प्रकाश खरे, सचिव सुरेंद्र शर्मा, संयोजक योगेंद्र प्रताप सिंह एवं समस्त ट्रस्टीगण सहित नगर के प्रसिद्ध गीतकार, कवि और समाजसेवी उपस्थित रहे।

राजगढ़-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव वरदान भवन में शिक्षक दिवस पर आयोजित 'शिक्षक सम्मान समारोह' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष चंदर सिंह सोंधिया, जिला शिक्षा अधिकारी बीएस बिसोरिया, जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी के.एन. गुप्ता, केंद्रीय विद्यालय के प्राचार्य नंदकिशोर सोनी, पीजी कॉलेज के प्रोफेसर बी.एस. बेस, प्रो. एम.एल. गुप्ता, ब्रह्माकुमारीज़ की जिला प्रभारी ब्र.कु. मधु बहन, समाजसेवी प्रताप सिंह सिसोदिया तथा आशीर्वाद फाउंडेशन की संस्थापक श्रीमति दिव्या विजयवर्गीय।

चेन्नई-अड्यार(तमिलनाडु)। दीपावली के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के वैकुंठ पीस गार्डन,सिरुथावुर में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. मुथुमणि बहन,निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़ अड्यार, सुधीर शेलके,स्टेशन डायरेक्टर,मद्रास ऑटोमिक पावर स्टेशन, बालासुब्रमण्यन,लायंस क्लब,थिरुपोरुर, बालाकृष्णन,लायन्स क्लब, थिरुपोरुर, वासुदेवन, हेड,एचआर,एमएपीएस, श्रीमति सुभा,सीएसआर प्रोजेक्ट मैनेजर, श्रीनिवास,मैनेजर, इंजीनियरिंग डिपार्ट.,एमएपीएस तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित विशेष रूप से सेवा समाज होम के बच्चे शामिल रहे।

भंडारा-महा.। लव कुमार,206 कोबरा बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर को ईश्वरीय निमंत्रण देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.शालू बहन, ब्र.कु. टीनेश्वरी बहन, ब्र.कु. गौरीशंकर भाई, ब्र.कु. प्रकाश भाई तथा ब्र.कु. सोनाली बहन।